CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th Jan. 2022, Revised on 26th Feb. 2022, Accepted 24th Mar. 2022

शोध–आलेख

आदिवासी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृति स्थिति का अध्ययन

* **डॉ. सुभाष चन्द्र सैनी**, *प्राचार्य*
माँ भारती टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डूण्डलोद, नवलगढ
E-Mail- drsubhashsaini10@gmail.com, Mob- 9314277137
डॉ. कमलेश सैनी, *प्राचार्या*
श्रीमती सरला परसरामपुरिया डूण्डलोद, नवलगढ
E-Mail- sainikamlesh908@gmail.com, Mob- 9057280843

मुख्य शब्द– *जाति, धर्म, समुदाय व वर्ग आदि।*

प्रस्तावना

भारत देश विभिन्नताओं का देश है। भारत देश में अनेक जाति, धर्म, समुदाय व वर्ग के लोग निवास करते है। भारतीय संस्कृति ही एक ऐसी संस्कृति है जिसमें सभी संस्कृतियों का समावेश पाया जाता है। भारत देश प्राचीन काल में आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था। इसमें सर्व प्रथम आर्य सभ्यता का उल्लेख मिलता है। इसके उपरान्त भारत वर्ष में अनेक आक्रान्ता आये और अपना राज्य स्थापित किया। इन सभी आक्रान्ताओं की संस्कृति को भारतीय संसकृति ने अपनाया परन्तु कभी भी भारतीय संसकृति ने अपने मूल रूप को नहीं छोड़ा सभी संस्कृतियों को अपने अन्दर समाहित करते हुए यह आदि काल से अखण्ड एवं अक्षुण बनी हुई है।

भारतीय समाज को प्राय तीन भागों में विभक्त किया जाता है। आदिवासी समाज, प्राचीन समाज और नगरीय समाज। इस विभाजन को भौगोलिक पर्यावरण एवं सामाजिक–सांस्कृतिक लक्षण के आधार पर स्वीकार किया जाता है। आदिवासी समाज अपेक्षित रूप से एक पृथक समाज है, जिसकी भाषा–संस्कृति एवं धर्म निश्चित है। वर्तमान समय में आदिवासी अपेक्षित रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े है। दूसरी ओर ग्रामीण समाज गाँवों का समाज है जिनका आधार जाति ओर कृषि व्यवस्था है। नगरीय समाज गैर–कृषि धन्धों जैसे कि उधोग एवं नौकरी हैं इन विभिन्नताओं के होते हुए भी तीनों समाजो–आदिवासी, ग्रामीण आदि नगरीय समाज के लोगों में निरन्तर अन्तः क्रिया होती है। जिसे समामज शास्त्री अन्तर्बन्धन मानते है।

सामान्यतः ''आदिवासी'' (INDIGENOUS PEOPLES) शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से ज्ञात इतिहास में सबसे पुराना सम्बन्ध रहा है। परन्तु संसार के विभिन्न भूभागों में जहाँ अलग–अलग धाराओं में अलग–अलग क्षेत्रो में आकार लोग बसे है। उस विशिष्ट भाग के प्राचीनतम अथवा प्रचीन निवासियों के लिए इस शब्द का उपयोग किया जाता है। प्राचीन साहित्य में दस्यु, निषाद आदि के रूप में विभिन्न प्रजातियाँ सारकों का उल्लेख किया गया है उनके वंशज समसामयिक भारत में आदिवासी माने जाते है। आदिवासी के समानाथी शब्दों में एबोरिजिनल इंडिजिनस, देशज, जनजाति, गिरिजन, बर्बर आदि प्रचलित है। अधिकांश आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवन यापन करते है।

प्रायः क्षेत्रीय समूहों में रहते है और उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयं पूर्ण रहती है। इन संस्कृतियों में जिज्ञासा का अभाव रहता है तथा ऊपर की थोड़ी ही पीढियों का यथार्थ इतिहास क्रमशः किंव दंतियों अनेक पौराणिक कथाओं में घुल–मिल जाता है। सीमित परिधि तथ लघु जनसंख्या के कारण इन संस्कृतियों के रूप में स्थिरता रहती है किसी एक काल में होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन अपने प्रभाव एवं व्यापकता में अपेक्षाकृत सीमित होते है। परंपरा केन्द्रित आदिवासी संस्कृतियाँ इसी कारण अपने अनेक पक्षों में रूढ़ीवादी भी दिखाई पड़ते है। भारत में इन लोगों की संसकृति में हिन्दू धर्म की संस्कृति देखी जाती है और वो सनातन के वंशज कहलाते है। उत्तर ओर दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, एशिया तथा अनेक द्वीपो और दीप समूहों में आज भी आदिवासी संस्कृतियों के अनेक रूप देखे जा सकते है।

भारत में अनुसुचित आदिवासी समूहों की संख्या 700 से अधिक है। भारत में 1871 से लेकर 1941 तक हुई जनगणनाओं में अलग–अलग धर्मो में गिना गया जैसे OTER RELIGION-1877 ऐबरिजनल 1881, फारेस्ट ट्राइब–1891, एनिमिस्ट–1901, एनिमिस्ट–1911, इत्यादि नामों से वर्णित किया गया है। परन्तु 1951 की जनगणना के बाद से आदिवासियों को हिन्दू धर्म में गिनना शुरू कर दिया।

भारत में आदिवासियों को हिन्दू धर्म के दो वर्गो में अधिसूचित किया गया है– अनुसूचित जनजाति और अनुसचित आदिम जनजाति भारत की जनगणना 1951 के अनुसार आदिवासियों की संख्या 9,91,11,408 की जो 2001 की जनगणना के अनुसार 12,43,26,240 हो गई। यह देश की जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है। प्रजातिय दृष्टि से इन समूहों में निग्रिटो, प्रोटो, आस्ट्रेलाइड और मंगोलायड तत्व मुख्तः पाये जाते है। यद्यपि कतिपय नृतत्ववेताओं ने नीग्रिटो तत्वों के सम्बन्ध में शंकाये उत्पन्न की है। भाषाशास्त्र की दृष्टि से उन्हें आस्ट्रोएशियाई, द्रविड़ और तिब्बती, चीनी, परिवारों की भाषाऐं बोलने वाले समूहों में विभाजित किया जा सकता है। भौगोलिक दृष्टि से आदिवासी भारत का विभाजन 4 प्रमुख क्षेत्रों में किया जा सकता है। उत्तरपूर्वीय क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र और दक्षिणी क्षेत्र।

आदिवासियों की सामाजिक व्यवस्था

1. आदिवासियों में प्रमुख व्यक्तित्व

- संत सुरमलदास भील – भीलों के प्रमुख धार्मिक गुरु, शिव भक्त।
- मतंग ऋषि – आदिवासी गुरु और विष्णु भक्त।

2. आदिवासी राजा

- एकलव्य – राजा हिरण्य धनु के पुत्र, महान धनुरधर एवं शिव भक्त।
- श्रृंगवेरपुर के राजा, निषाद भील राजा।

प्रमुख क्रान्तिकारी

- बिरसा मुंडा – मुन्डा विद्रोह के जननायक ।
- टंटयाभील – भारत के रोबिन्हुड।
- झलकारी बाई – रानी लक्ष्मी बाई के साथ कन्धें से कन्धा मिलकार अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने वाली विरांगना।
- सिदधू मुर्मू – संथालहूल का नेतृत्व करने वाले वीर। इन्होंने अंग्रेजों की बन्दुक का जबाब तीर से दिया।
- तिलक मांझी – 11 फरवरी 1750 को जन्में तिलक मांझी ने झारखण्ड की पहाड़ियों पर ब्रिटिश हुकुमत से लौहा लिया।
- बुधू भगत – जन्म 17 फरवरी 1792, भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध क्रान्तिवीर के रूप में जाने जाते है। इनकी लड़ाई अंग्रेजों, जमीनदारों तथा साहूकारों के द्वारा किये जा रहे अत्याचार और अन्याय के विरूद्ध थी।
- तेलंगा खड़िया – वीर महापुरूष जन्म 09 फरवरी 1806, भारतीय जनजातिया स्वतन्त्रता सेनानी।

बाबा पिथोरा देव को गुजरात आदिवासी भगवान मानते है।

आदिवासी प्रमुख गोत्र

मुन्डा, गोत्र, उरॉव, खड़िया, आंध, गोंड, बोडो, कोल, भील, सहरिया, संथाल, मीणा, लोहरा, बिरहोर, पारधी, असुर, टाकणकार आदि।

आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ

भाषाविज्ञानियों ने भारत आदिवासियों की भाषा को मुख्यतः तीन भाषा परिवारों में रखा है। द्रविड, आस्ट्रिक, और चीनी तिब्बती। लेकिन कुछ आदिवासी भाषाएँ भारोपीय भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है।

आदिवासी भाषाओं में ''भीली'' भाषा सर्वाधिक बोली जाती है।

''गोंडी'' भाषा दूसरे नम्बर पर बोली जाती है।

संताली भाषा तीसरे नम्बर पर बोली जानी वाली भाषा है।

इसके अलावा अबुजमारीयां, गारो, ऑरियां, त्संगला, सौराष्ट्र, मेगाम, चिसाका, अरॉन्ग आदि भाषाएँ भी बोली जाती है।

आदिवासियों की सांस्कृतिक व्यवस्था

आदिवासी लोगों के प्रमुख नृत्य

हमारे देश की सीमा के विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों की अपनी अलग–अलग भाषा एवं संस्कृति के साथ – साथ इन क्षेत्रों की अपनी अलग ही लोक गीतों एवं नृत्यों की समृद्ध विरासत है जो आज इलेकट्रोनिक मिडिया की चकाचौध में कहीं न कहीं लुप्त होती जा रही है।

साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात्पशुः पुछ विषाणहीनः।

प्रमुख नृत्य–धोबी नृत्य, अहीरों का नाच (फरूवाही), कहरही (कहरूआ नृत्य), गोड़व नृत्य, नटुआ नृत्य, कोलदही नृत्य, खटिकही नृत्य, मुसहरी नृत्य, डोमकच नृत्य, ज्वालमुखी अग्ररही देवी नृत्य, करमा नृत्य, जनजातीय इन्द्रवासी नृत्य, झुमर नृत्य, शैला नृत्य, विदेसिया नृत्य, कजरी नृत्य, होली नृत्य, राई नृत्य, बधाई नृत्य, भगोरिया नृत्य आदि।

आदिवासी लोगों का खान–पान एवं रहन–सहन– आदिवासियों की सर्वाधिक आबादी अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैण्ड और मेघालय में है। यहां की सम्पूर्ण जनसंख्या आदिवासी है। पर्वतमालाएं, सदाबहार वन एवं हमेशा बहने वाली नदियां इस क्षेत्र में नैसर्गिक सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है। जैव विविधता, सांस्कृति कोमार्य, सामूहिकता का बोध, प्रकृति प्रेम, परम्परा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता आदि इस क्षेत्र की अप्रतिम विशेषताएं है। खान–पान की दृष्टि से यह क्षेत्र विशिष्ट है। चावल आदिवासी लोगों का प्रमुख भोजन है। बोकार, रामो, आसिंग और कई उपजातियां अपने भोजन में मक्के और बाजरे का भी उपयोग करती है। क्योंकि उस क्षेत्र में चावल का उत्पादन कम होता है। यह बैंगन कद्दू और सरसों के पत्तों का सब्जी के रूप में उपयोग करते है। यह लोग बांस के नवकोपल की सब्जी भी चाव से खाते है। बांस के कोपल के कई अन्य व्यंजन भी बनाये जाते है। जैसे – कोपल का आचार (उप्तीर), सुखी मछली का चूरा (न्गोतीर), भूने मक्के का चूरा (पेतीर), भूने हुए चावल का चूरा (अमतीर), चावल की रोटी (ईटी) के साथ–साथ कन्दमूल फल भी खाते है। ये लोग कटहल, केला, संतरा, अन्नानास इत्यादि फल भी खाते है। आदिवासी लोग उबली हुई सब्जी खाते है। उनमें केवल मिर्च और नमक डाला जाता है। मछलियों को तेल में भूनने का रिवाज नहीं है। ये लोग दिन में तीन बार भोजन करते है। मदिरा इनका दैनिक पैय है। ये चावल से बनी होती है इससे स्थानीय भाषा में अपोंग कहा जाता है। सभी सामाजिक, धार्मिक और सामाजिक अवसरों तथा उत्सवों पर अपोंग का पीना–पिलाना अनिवार्य होता है। बिना इसके कोई भी संस्कार सम्पन्न नहीं होता है। शेरदुक्पेन महिलायें 'अरा' और 'फाक' बनाने में अधिक दक्ष होती है। बच्चे बुढ़े, स्त्री सभी इस पेय पदार्थ का सेवन करते है। अतिथियों का इस मदिरा से स्वागत किया जाता है। बांस की जड़ की सब्जी भी ये लोग बड़े चाव से

खाते है। कढ़ी ये लोग चावल के आट्टे से बनाते है। ये लोग बकरी, बतख, सुअर, बिल्ली, सांप, छिपकली इत्यादि सभी पशु–पक्षियों का मांस खाते है।

एक ऐसा आदिवासी समाज भी है जो मनुष्य का शूप पीते है। ये लोग अमेजान, वर्षा, वनों के किनारे बसते है। इनको यानोमानी आदिवासी भी कहा जाता है। इस समाज के लोग अपने प्रिय लोगों की आत्मा को बचाये रखने के लिए अपनी ही जाति के मृत लोगों की राख खाने में विश्वास करते है। ने नग्न घूमते है तथा खुले टेन्ट में छत में रहते है। आदिवासी लोगे प्रकृति के ज्यादा करीब होते है। इसी कारण अन्य लोगों की अपेक्षा प्रकृति से मिलने वाले खाद्य पदार्थों के विशेष जानकार है। उराव आदिवासियों में बड़े–बुढें बच्चा पैदा होने पर यह नहीं पूछते कि लड़का हुआ की लड़की आदिवासी जंगल जमीन से जुड़े है इसी कारण बच्चा पैदा होने पर पूछते है हल जोतने वाला हुआ या सागतोड़वा ? अर्थात लड़का हुआ तो हल जोतने वाला और लड़की हुई तो साग तोड़ने वाली। झारखण्ड के आदिवासी निम्न सागो का प्रयोग करते है– बैंग साग, फुटकल साग, चाकोड़ा साग, सनई साग, कटई साग, सुनसुनियां साग, कोटनार साग, टूम्पा साग, जिरहूल साग, कैना–मैना साग आदि।

डॉ. अमृत कुल्लू– जब कभी आदिवासियों के विकास की बात होती है तब यह कहा जाता है कि आदिवासी संस्कृति में बदलाव कर उन्हें विकास की धारा से जोड़ा जा सकता है। ऐसे विचार आदिवासी विकास और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य से हमें भटका रहे हैं। वास्तव में आदिवासी संस्कृति के विस्तार से ही आत्मनिर्भरता का लक्ष्य पूरा किया जा सकता है।

पूर्व तथा वर्तमान में विभिन्न सरकारों द्वारा विकास सम्बन्धी कई योजनाओं का निर्माण किया गया, लेकिन आत्मनिर्भरता का लक्ष्य आज तक पूरा नहीं हो सका। ऐसे में इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि आदिवासी समाज तक सरकार की विभिन्न विकास योजनाओं की पहुंच अन्य समाज के मुकाबले न्यूनतम है। इसके बावजूद अन्य समाज की तुलना में आदिवासी समाज में आत्मनिर्भरता सर्वाधिक हैं इसका मुख्य कारण आदिवासी संस्कृति की वह विशिष्टता है जिसके अन्तर्गत विकास की रणनीति बाह्य पारिस्थितिकी तंत्र से प्रभावित न होकर स्थानीय परिस्थितिकी तंत्र, सर्वसम्मति, स्वशासन और प्रकृति संवर्धन से प्रभावित होकर बनाई जाती हैं अपनी संस्कृति में स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के संवर्धन को शामिल करना आदिवासी समाज को सतत विकास के साथ जोड़कर रखता है जिस कारण से वैश्विक आर्थिक मंदी जैसी स्थिति भी आदिवासी क्षेत्रों में न्यूनतम प्रभावी या अप्रभावी हो जाती है। भारत में आत्मनिर्भरता का स्वर्णिम इतिहास रहा है, लेकिन समय के साथ बाह्य प्रभावों के कारण आत्मनिर्भरता धीरे–धीरे खत्म होती गई। वर्तमान स्थिति तो ऐसी हो गई है कि परिवार के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानीय सामाजिक संस्कृति नगण्य होती जा रही है, जबकि पश्चिमी संस्कृति ज्यादा प्रभावी रूप से दिखने लगी है। हमें यह समझना चाहिए कि संस्कृति ही किसी समाज को आत्मनिर्भर बनाती है तथा जिस किसी भी क्षेत्र में स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर आधारित संस्कृति की तुलना में बाह्य संस्कृति का ज्यादा प्रभाव होगा, उन क्षेत्रों में सरकार लगातार विकास की योजनाओं में आर्थिक निवेश कर भी आत्मनिर्भरता नहीं ला सकती है।

आदिवासी समाज की विशेषताएँ

(1) इनका एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है।

(2) सामान्यतया आदिवासी जंगलों तथा पहाड़ों में रहते हैं।

(3) दूसरे समूहों की तुलना में ये एक पृथक या अर्ध पृथक क्षेत्र में निवास करते हैं।

(4) इनकी अपनी संस्कृति, जनरीतियाँ, ब्रह्मविज्ञान और विश्वास की व्यवस्था होती है।

(5) आर्थिक दृष्टि से ये आत्म निर्भर होते हैं अर्थात ये जीविकोपार्जन करते हैं, एवं बाजार के लिए अतिरिक्त उत्पादन नहीं करते। इनकी तकनीकी आदिम होती है। इनकी अर्थव्यवस्था मुद्रा पर निर्भर नहीं होती। ये वस्तु–विनिमय करते है।

(6) इनकी रूचि वर्तमान की समस्याओं से होती है, वे भविष्य के बारे में नहीं सोचते।

(7) इनकी अपनी स्वयं की भाषा होती है, तथा इस भाषा की कोई लिपि नहीं होती।

(8) इनकी स्वयं की राजनीतिक व्यवस्था होती है। यह व्यवस्था राज्यहीन या राज्य दोनों की होती है। प्रारम्भ में आदिवासी समाज राज्यहीन समाज था। इसका मतलब हुआ, इस समाज में कोई राजा नहीं होता था। वे अपनी कानून व्यवस्था को परिवार और नातेदारी सम्बन्धों से चलाते थे। बाद में इस समाज में राज्य व्यवस्था आयी, जिसमें चुनाव द्वारा अपने राजा या मुखिया को मनोनीत करते थे। आज यह स्थिति बदल गयी है। वे स्वायता को छोड़ चुके है और स्थानीय प्रशासन के अंग बन गये है।

आदिवासी समस्याएँ

जब आदिवासी बाहरी समूहों के सम्पर्क में आये तब उनमें कुछ समस्याएं आ गयी। मुस्लिम शासन के आने से पहले आदिवासी सामान्यताया समाज की मुख्य धारा से पृथक थे। मुस्लिम प्रशासन की प्रक्रिया में राज्य ने राज्व ग्रहण करने की प्रक्रिया चलायी। मुस्लिम शासकों ने राजस्व तो लिया लेकिन आदिवासियों के रीति–रिवाजों और परम्पराओं में हस्तक्षेप नहीं किया। ब्रिटिश काल में आदिवसियों का शोषण प्रारम्भ हुआ। यह मुख्य रूप से तीन कारणों से पाया गया :–

(क) ब्रिटिश आदिवासियों पर शासन करना चाहते थे।

(ख) बिटिश चाहते थे कि आदिवासी क्षेत्र में जो आय के स्त्रोत हैं, उन्हें उनसे ले लिया जाये। सामान्यतया आय के स्त्रोत जैसे कि खनिज सम्पदा जो आदिवासी क्षेत्र में थी।

(ग) तर्क के बहाने ये लोग आदिवासियों को ईसाई धर्म की शिक्षा देते थे।

– सांस्कृतिक सम्बन्ध निम्नलिखित कारणों से आदिवासियों के सम्पर्क में आकर प्रारम्भ हुआ–

(क) आदिवासी क्षेत्र में खनिज सम्पदा को प्राप्त होना।

(ख) आदिवासी क्षेत्र में प्रशसकों और मिशनरियों का प्रवेश।

(ग) आदिवासी क्षेत्र में दवा–दारू करने वाले और बाहरी लोगों की उपस्थिति।

(घ) आदिवासी क्षेत्र में आवागमन और संचार के साधन जिन्होंने बाहरी लोगों को इस क्षेत्र में आने के लिए सुविधाएं प्रदान की।

(ड़) बांध बनने, उद्योगों के विकास सिंचाई साधनों के विकास के परिणामस्वरूप आदिवासियों का उनके क्षेत्र से विस्थापन।

इस प्रकार सांस्कृतिक सम्पर्क के कारण कई आदिवासी समस्याएं पैदा हो गयी हैं। ये समस्याएं निम्न हैं:–

(1) **भूमि अलगाव** :–भूमि अलगाव की समस्या मुद्रा अर्थव्यवस्था के आने के कारण पैदा हुई है। प्रत्येग उपभोग के साथ आदिवासी को धन की आवश्यकता पड़ी लेकिन कमाने का कोई और स्त्रोत उसके पास नहीं रहा, परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी जमीन को गिरवी रखा या उसको बेच दिया। इसके अतिरिक्त बाहरी लोगों ने आदिवासियों का शोषण किया और उनसे जमीन हथिया ली। राज्य ने भी औद्योगीकरण के नाम पर जमीन को ले लिया। राज्य ने कई अधिनियम पारित करके जमीन के स्थानान्तरण या बिक्री को गैर–आदिवासियों के हाथों में पहुँचने से रोक दिया।

(2) **ऋणग्रस्तता** : आय के साधनों के अभाव में आदिवासियों की ऋणग्रस्तता बढ़ गयी। कई महाजनों और साहूकारों ने ऋण देकर गरीबी बढ़ा दी। इन महाजनों ने ऊँची ब्याज दर पर ऋण दिया। इस ऋण सुविधा के कारण आदिवासी शराब पीने लगे, शादी में स्त्रीधन या वधू मूल्य की रकम बढ़ गयी। इस उपभोग के कारण आदिवासी को धन की आवश्यकता पड़ी और इस कारण वह साहूकार के पास जाने लगा। इन प्रभावशाली कारणों से प्रेरित होकर राज्य सरकार ने साहूकारों को आदिवासी क्षेत्रों में पहुँचने से रोक दिया। राज्य ने बैंक और सहकारी सोसाइटी को प्रेरित किया कि वे अपेक्षित रूप से थोड़े ब्याज में आदिवासियों की सहायता करें।

(3) **बंधुआ मजदूर :** यह गंभीर समस्या है। इस समस्या का उद्‌गम नितान्त गरीबी और आय की निरन्तर होने वाली कमी है। देखा जजाय तो भूमि अलगाव ऋणग्रस्तता, बंधुआ मजदूरी एवं गरीबी पारस्परिक रूप से जुड़े हुए हैं। धन के अभाव में साहूकार आदिवासियों की जमीन को गिरवी रख लेता है और धन के न होने कारण आदिवासी कर्जा नहीं चुका पाता। इसका प्रभाव यह होता है कि बंधुआ मजदूर बन जाता है।

(4) **कृषि स्थानान्तरण :** आदिवासियों की बहुत बड़ी समस्या कृषि स्थानान्तरण है, इसे कई नामों से जानते हैं। उत्तर पूर्व में यह झूम कहलाती है। बिहार में इसे खालू कहते हैं। उड़ीसा के खोण्ड और पराजन आदिवासियों में यह प्रथा कोडू नाम से जानी जाती है।

कृषि स्थान्तरण का आशय जंगल और विशेष करे पहाड़ी क्षेत्र की जमीन को काट देना या खाली किये स्थान पर बीज को छिड़क देना होता है।

संदर्भ

1. वीरेन्द्र प्रमार – अरूणाचल के आदिवासी और उनका लोकसाहित्य (2009)
2. तोसिब आलम, मोहम्मद अवैस, मोहम्मद आसिफ (2009) ''सोशियो–इकॉनॉमि एम्पावरमेंट ऑफ ट्रायबल वुमन एन इंडियन पर्सपेक्टीव'', इन्रनेशल जरनल ऑफ रूरल स्टडीज (आयजेआरएस) (2009), वोल्यूम 10, पृष्ठ संख्या 11, आयएसएसएन–1023–2001
3. मेजर पी आर टी गुर्डन – द खासीज (2010)
4. श्री टी.रतन – हिन्दू, रिलिजन एंड कल्चर ऑफ नार्थ ईस्ट इंडिया (2011)
5. डॉ. बी.एन.बोरदोलाई – ट्राइब्स ऑफ असम–खंड– I, II और III
6. ए. अँगेल अनिला (2012), 'ए स्टडी आन सोशियो–इकॉनॉमिक कंडीशन ऑफ सेल्फ हेल्प ग्रुप मेम्बरस् इन टीरूनेलवेली डिस्ट्रीक्ट, तमिलनाडू'', झेनिथ इंटरनेशनल जरनल आफ बिजनेस इकॉनॉमिक्स एण्ड मैनेजमेंट रिसर्च, वोल्यूम 2, नं. 2, पेज संख्या 216, आयएसएसएन–2249–8826
7. पूजाश्री चैटर्जी (2014), ''सोशल एण्ड इकॉनॉमिल स्टेटस् आफ ट्रायबल वूमन इन इंडिया – दी चैलेजेस एण्ड दी रोड अहडे'', इंटरनेशनल जरनल आफ इंटरडिसिप्लीनरी एण्ड मल्टीडिसिप्लीनरी स्टडीज (आयजेआयएमएस) वोल्यूम 02, पेज संख्या 60, आयएसएसएन–2348–0343
8. https://nios.ac.in › media › Module_4 › Lesson_26
9. https://ignca.gov.in › tribal-art-culture
10. https://hi.wikipedia.org

*** Corresponding Author**

डॉ. सुभाष चन्द्र सैनी, *प्राचार्य*

माँ भारती टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डूण्डलोद, नवलगढ

E-Mail- drsubhashsaini10@gmail.com, Mob- 9314277137

डॉ. कमलेश सैनी, *प्राचार्या*

श्रीमती सरला परसरामपुरिया डूण्डलोद, नवलगढ

E-Mail- sainikamlesh908@gmail.com, Mob- 9057280843